स्नातक–हिन्दी–प्रतिष्ठा–तृतीय वर्ष

कर्मभूमि – "दबा हुआ पुरुषार्थ ही स्त्रीत्व है।"

– डॉ॰ मुन्ना साह

अमरकान्त के पिता समरकान्त, बहन – सुनैना, पत्नी – सुखदा। अमरकान्त की अवस्था उन्नीस साल से कम न थी, पर देह और बुद्धि को देखते हुए, अभी किशोर दिखता था। देह का दुर्बल, बुद्धि का मंद। दस साल पढ़ते हो गए थे और अभी ज्यों – त्यों करके आठवीं में पहुँचा था।

अमरकान्त का विवाह लखनऊ के एक धनी परिवार की लड़की सुखदा से हुई थी। सुखदा का परवरिश लड़के की भाँति हुई थी। उसकी माता रेणुका देवी ने 'बेटे की साध बेटी से पूरी की थी।' त्याग की जगह भोग, शील की जगह तेज, कोमल की जगह तीव्र का संस्कार किया था। एक युवक–प्रकृति की युवती ब्याही गयी युवती प्रकृति के युवक से, जिसमें पुरुषार्थ का कोई गुण नहीं था। इसीलिए प्रेमचंद ने कहा है कि – **"दबा हुआ पुरुषार्थ ही स्त्रीत्व है।"** विवाह के दो साल होने के बावजूद अमरकान्त और सुखदा में कोई सामंजस्य नहीं हो पाया था।

कुछ वर्ष पश्चात् अमरकान्त के जीवन में संयम और प्रयास की लगन पैदा हो गई थी। उसकी प्रकृति में जो ढीलापन, निर्जीवता और संकोच था वह परिवर्तित होकर कोमलता का रूप ले रहा था। पढ़ने में रुचि लेने लगा था। उसके पिता समरकान्त उसे अब घर के व्यवसाय में लगाना चाहते थे किंतु अमरकान्त विद्याभ्यास दूने वेग से करने लगा था।

———————— • • • ————————